292/1813/11

शोधकर्त्री
शबनम खानम

शोध निर्देशक
डा॰ चन्द्रदेव यादव

हिन्दी विभाग
मानविकी एवं भाषा संकाय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जामिया नगर, नई दिल्ली–110025

शोध विषयः– 19वीं शताब्दी के उपन्यासों में नवजागरण का स्वर

1. **नवजागरण का स्वरः–** नवजागरण को पुर्नजागरण काल, पुनरुथान नवीन जागरण, ज्ञानोदय तथा नवजागरण के नाम से अभिहीत किया जाता है। नवजागरण का स्वरुप बहुत व्यापक है। इसकी वजह से भारतीय मध्यकालीन जड़ता अपने को अलग कर पाए। स्त्री चेतना इस नवजागरण का प्रमुख अंग बन गयी।

पश्चिमी नवजागरणः– चौहदवी शताब्दी में यूरोप अपनी मध्यकालीनता से मुक्ति पाकर व्यक्तिवाद की तर मुड़ा। नवजागरण का असर यूरोपीय साहित्य तथा कला दोनों पर पड़ा। सामंती व्यवस्था का पतन हुआ तथा गद्य अस्तित्व में आया।

भारतीय नवजागरणः– भारतीय नवजागरण अपने अतीत से जुड़ा हुआ है तथा उसी से प्रेरणा ग्रहण करके आगे बढ़ा। इसने रीतिकालीन परिवेश से अपने आपको मुक्त किया। साहित्य में काव्य की जगह गद्य का विकास हुआ।

हिन्दी नवजागरणः– हिन्दी नवजागरण के प्रणेता भारतेन्दु थे। तत्कालीन उपन्यासों, नाटकों और निबन्धों में नवजागरण का स्वर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप में मुखरित हुआ है।

पाश्चात्य और भारतीय नवजागरण के अन्तः संबंधः– पाश्चात्य नवजागरण धर्म सुधार, चर्च तथा सामन्ती व्यवस्था के चंगुल से मुक्ति की लालसा के कारण अस्तित्व में आया। भारतीय समाज पश्चिमी समाज से पूरी तरह भिन्न था। वह रूढ़िग्रस्त था। लेकिन यूरोपीय नवजागरण की तरह इसमें भी धार्मिक सुधारों के साथ नवजागरण की चेतना दिखायी पड़ी।

2. **नवजागरण कालीन परिदृश्य और खड़ीबोली का उदय :–** आधुनिक काल से पहले न तो खड़ीबोली का और न ही हिन्दी की अन्य बोलियों का गद्य विकसित हो पाया था। उन्नीसवीं शताब्दी से पहले गद्य अपने अन्य रूप में विकसित नहीं हुआ था। वास्तव में खड़ीबोली गद्य नवजागरण का पर्याय बन गया।

नवजागरण की चेतनाः– 19वीं शताब्दी में समाज में नवजागरण की वजह से गतिशीलता आ गयी। सामाजिक सुधार तथा धार्मिक रूढ़ियों को समाप्त करने के लिए जनता को जागरूक किया जाने लगा।

हिन्दी गद्य की परम्परा (भाषिक रुप):– हिन्दी गद्य का विकास 19वीं शताब्दी में ही देखने के मिलता है लेखकों ने एक खास भार्षिक चेतना के कारण खड़ीबोली हिन्दी का रुप देने के साथ उसको परिभार्जित तथा परिष्कृत भी किया।

प्रेस और पत्रकारिताः– नवजागरण काल में छापेखाने के आविष्कार के कारण ही भारत में पत्र–पत्रिकाओं की सहायता से तत्कालीन सुधारकों तथा साहित्यकारों ने अपने विचारों को जनता तक पहुंचाने का कार्य किया।

नये साहित्यरुपः– नाटक, निबंध, आलोचना, उपन्यास आदि विधाओं का प्रारम्भ इसी युग में हुआ। उपन्यास का उदय हिन्दी नवजागरण की देन है।

उपन्यास का उदयः– उन्नीसवीं शताब्दी में नवजागरण और उस समय की नई परिस्थितयों के कारण हिन्दी उपन्यास का उदय हुआ। इन उपन्यासों में तत्कालीन समाज तथा परिस्थितयों की झलक दिखायी पड़ती है।

3. **औपन्यासिक विषय वैविध्य और नवजागरण कालीन मानसिकताः–** मध्यक्रम और मध्यकालीन सोच समाप्त हो रही थी। इन विषम परिस्थितियों में एक जागरूक वर्ग का उदय होने लगा। लेखकों ने अपने निबंधों, उपन्यासों और पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भारतीयों की कुण्ठित मानसिकता को तोड़ने का प्रयास किया।

सामाजिक उपन्यासः– इसमें देवरानी जेठानी की कहानी, भाग्यवती परीक्षागुरु, सौ सुजान और एक सुजान, निः सहाय हिन्दू, पूर्णप्रकाश खासतौर से उल्लेखनीय है। ये सभी तत्कालीन सामाजिक सांस्कृतिक समस्याओं से जुड़े हैं।

ऐतिहासिक उपन्यासः– इस समय बहुत कम ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गए। फिर भी देवकीनन्दन खत्री ने एक ऐतिहासिक उपन्यास लिखा। अतः उन्हें पहला ऐतिहासिक उपन्यास 'गुप्त गोदना' की रचना की।

रोमान्सपरक उपन्यासः– 'श्यामास्वपन' उपन्यास प्रेमपरक उपन्यास है। इसके अतिरिक्त चंद्राकांता, पूर्ण प्रकाश, रानी केतकी की कहानी में भी प्रेम की कथा का वर्णन किया है।

तिलिस्यी और ऐयारी उपन्यासः– तिलिस्य पर आधारित उपन्यास कौतहल वर्धक होते हैं। ये पाठकों की जिज्ञासा बनाए रखते हैं। इन उपन्यासों में चंद्रकांता, चंद्रकाता संतति तथा भूतनाथ आदि प्रमुख है।

4. **हिन्दी उपन्यासः सामाजिक और संस्कृति चेतनाः–** उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज का रुप निरंतर बदल रहा था और सामाजिक प्रक्रियाएं व्यक्ति को प्रभावित कर रही थी। साहित्य में भी परिस्थितयां के अनुसार बदलाव हो रहा था।

स्त्री समस्याः– भाग्यवती तथा देवरानी जेठानी की देवरानी नवीन चेतना से युक्त औरतें है। उपन्यासों के माध्यम द्वारा नारी स्वतंत्रता एवं चेतना के लिए प्रयास प्रारम्भ हो गए थे। इस दौर की नारी धीरे–धीरे जागरुक हो रही थी। वह आत्मनिर्भर बनने लगी थी।

अंग्रेजी शासन बनाम जातीय भावनाः– अंग्रेजी शासन ने अनजाने में ऐसी परिस्थितयाँ तैयार कर दी थी कि भारत में राष्ट्रीयता का विकास होना शुरु हुआ।

जातीय भेद और परम्परा के प्रति विद्रोहः– इन उपन्यासों में जातीय गौरव का चित्रण स्वतंत्र रुप में नहीं मिलता, फिर भी अपनी संस्कृति की रक्षा के कारण यह जातीय चेतना से जुड़े हुए थे।

धार्मिक पाखण्ड और अंधविश्वासः– भारत में धर्म के नाम पर अनेक अंधविश्वास मौजूद थे। आधुनिक युग के अनुसार धार्मिक मान्यताएं बदलने लगी थी। उस समय के अधिकांश लेखकों ने अपनी नवीन दृष्टिकोण का परिचय दिया।

शिक्षाः– शिक्षा नवजागरण में इसलिए भी महत्वपूर्ण हो गयी थी कि तत्कालीन भारतीय समाज में फैली कुरीतियों शिक्षा के द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

हिन्दी उपन्यासः राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं की पहचानः– नई और जटिल परिस्थतियों को देखते हुए साहित्यकार, राजनीतिज्ञ और दूसरे लोग जागरूक होने लगे थे। उस समय के लगभग सभी साहित्यकारों में आर्थिक चिंता के साथ ही राजनीतिक चिन्ता भी व्यक्त कीं है।

स्वदेशी आन्दोलनः– अंग्रेजों ने यहां के उद्योग–धन्धों को संरक्षण देना तो दूर, उनका पतन करना ही प्रारम्भ कर दिया। इसलिए उस समय के लेखकों ने विदेशी वस्तुओं के उद्योग पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश की तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया।

राजनीतिक स्वरः– अंग्रेजों ने भारतीय जनता का शोषण करने की नीति का पालन किया और अपने लाभ को सबसे ऊपर रखा। साहित्य और पत्रकारिता में देशभक्ति का स्वर सुनायी पड़ा।

आर्थिक शोषण और नया आर्थिक चिंतनः– साहित्यकारों ने अपने निबंधों, नाटकों, उपन्यासों तथा कविताओं में इस आर्थिक शोषण को जनता तक पहुंचाने का कार्य किया।

किसान और शिल्पी वर्ग कर समस्याएंः– ब्रिटिश शासन में भारतीय अर्थव्यवस्था पूरी तरह टूट गयी थी। किसानों और शिल्पकारों की समस्याएं दिन पर दिन विषम होती चली गयी गई। तत्कालीन लेखकों ने इनकी दशा पर व्यापक चिंता व्यक्त की है।